M.A- Sem-II Paper-CC-5

इकाई-2. खण्ड काव्य

Ques. कंसवहो कथा वस्तु प्रस्तुत करें।

Ans:- इस कंसवहो नामक खण्डकाव्य में चार सर्ग और 233 पद्य हैं। कंस कथा में बताया गया है कि एक बार श्रीकृष्ण अपने बड़े भाई बलराम के साथ सायंकाल के समय ब्रज में चंक्रमण कर रहे थे। उसी समय गान्दिनी पुत्र अक्रूर उनके पास आया। श्रीकृष्ण ने उसका स्वागत किया और अक्रूर ने इनकी स्तुती की। अनन्तर उसने दुःख के साथ प्रकट किया कि मथुरा में कंस छल से उन्हें मारने का कूट-जाल रच रहा है और उसी के लिए उसने श्रीकृष्ण को धनुष यज्ञ का निमन्त्रण भेजा। बलराम को धनुष यज्ञ देखने का कौतुल उत्पन्न हुआ, किन्तु साथ ही उक्त कपटजाल के कारण उसकी मन में भय भी उत्पन्न हुआ। श्रीकृष्ण ने निमन्त्रण स्वीकार कर लिया और अक्रूर के साथ ही जाने का निश्चय किया। प्रस्थान के समय उन्हें रथारूढ़ देखकर गोपियाँ विलाप करने लगी। अक्रूर ने उन्हें आश्वासन दिया कि श्रीकृष्ण उन्हें सदा के लिए छोड़कर नहीं जा रहे हैं, बल्कि एक महत्वपूर्ण कार्यसिद्ध कर वे पुनः उनसे आकर मिलेंगे। तत्पश्चात कृष्ण और बलराम अपने परिजनों सहित चलकर यमुना के तट पर आये और वहाँ स्नान कर मथुरा में प्रविष्ट हुए।

श्रीकृष्ण और बलराम राजमार्ग से जा रहे थे उन्हें कंस का धोबी मिला, जिससे उन्होंने कुछ वस्त्रों की याचना की। उत्तर में उसका दुर्व्यवहार देखकर कृष्ण क्रोध हो गये श्रीकृष्ण ने उसे पछाड़ दिया, जिससे उसकी मृत्यु हो गया। कृष्ण और

आगे बढ़ने पर उन्हें कंस की कुब्जा शिल्पकारिका दासी मिली, जो कंस के लिए केशर, चन्दन आदि सुगन्धित पदार्थ ले जा रही थी। उसने हर्ष और विनय पूर्वक वे केशर-चन्दन आदि सभी पदार्थ श्रीकृष्ण को अर्पण किये। प्रसन्न होकर श्रीकृष्ण ने उसके कुब्जा को छू दिया, जिससे उसका कुबड़ापन दूर हो गया और वह एक सुन्दर युवती बन गयी। उसने कृष्ण से प्रेम की भिक्षा मांगी जिसे उन्होंने यह कहकर टाल दिया कि अभी इसके लिए अवकाश नहीं है, फिर देखा जायगा। वहाँ से चलकर वे धनुषशाला में प्रविष्ट हुए और वहाँ रखे धनुष को तोड़कर फेंक दिया रक्षकों के विरोध करने पर उन्होंने उन्हें मार भगाये। अन्तर अनन्तर वे मथुरा नगरी की शोभा देखने लगे। सन्ध्या समय वे अपने निवास स्थान पर लौट आये।

पुनः प्रातःकाल होने पर बन्दीजनों ने प्रभात वर्णन एवं स्तुतिपाठ द्वारा श्रीकृष्ण को जगाया। कृष्ण और बलराम प्रातः क्रियाओं से निवृत्त होकर पुनः नगर की ओर चल पड़े। नगर द्वार पर अम्बष्ठ ने कुवलयापीड नामक उन्मत्त हाथी उनको रोकने के लिए खड़ा कर दिया था। कृष्ण ने उस हाथी को भी पछाड़ दिया और अम्बष्ठ को भी। आगे चलने पर चाणूर और मुष्टिक नामक मल्ल मिले, जिन्हें कृष्ण और बलराम ने मल्लयुद्ध करके स्वर्ग पहुँचा दिया इस समाचार से क्रोधित होकर कंस स्वयं ढाल तलवार लेकर उठा ही था कि तत्काल ही श्रीकृष्ण ने उसे पछाड़ कर अपने खड्ग द्वारा उसका नाम्योच्छेद कर दिया और कंस का वध हो गया। देव ... सभी ने पुष्प का स्वागत किया।

बाजे-बजाने लगे और देवाङ्गनाएँ आकाश में नाच उठीं।

कंस की मृत्यु से समस्त जनता को आनन्द और सन्तोष हुआ। कृष्ण ने उग्रसेन को भोज और अन्धकों का चक्रवर्ती बनाया और अपने माता-पिता, वसुदेव और देवकी को बन्दीगृह से छुड़ाया। पिता ने स्नेह से गदगद होकर उन्हें आशीर्वाद दिया।